प्रकाशन तिथि : 01 जुलाई, 2020
प्रेषण तिथि : 04 जुलाई, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 08 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

प्रताप के प्रताप को कम करने का प्रयास!

(राजस्थान सरकार का दुर्भावनापूर्ण निर्णय)

राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग की चाह पर राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने कक्षा 10 व 12 की इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में राष्ट्रीय गौरव महाराणा प्रताप के प्रताप को कम करने का प्रयास किया है। 18 जून को हल्दीघाटी दिवस के दिन एक राष्ट्रीय दैनिक ने इस खबर को प्रमुखता से छापा। जानकारी जुटाने पर सामने आया कि सरकार ने 2019 में ही पाठ्यक्रम में शिक्षा मंत्री की ईच्छा के अनुरूप परिवर्तन कर दिया था। कक्षा 10 की पुस्तक में से वे तथ्य हटा दिए गए जो हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर की असफलता सिद्ध करते हैं। साथ ही अमरसिंह द्वारा अब्दुल रहीम खानखाना के परिवार को बंधक बनाने पर महाराणा के नाराज होने एवं उन्हें ससम्मान वापिस छोड़कर आने के आदेश का प्रसंग भी हटा दिया गया। उल्लेखनीय है कि शिक्षा मंत्री ने मंत्री बनते ही प्रताप की महानता पर प्रश्न उठाए थे और चौतरफा विरोध होने पर अपना वक्तव्य तो बदल दिया था लेकिन पृष्ठ द्वार से अपनी कुंठित मानसिकता को लागू करने के लिए पाठ्यक्रम में 2019 में ही बदलाव कर दिया। अपनी इसी कूंठा को पुष्ट करने के लिए 2020 में आगे बढ़ते हुए महाराणा प्रताप को उच्च कोटि के सेनानायक के गुणों से विहीन बता दिया गया। हल्दीघाटी के नामकरण एवं चेतक को लेकर भ्रामक तथ्य डाले गए हैं एवं महाराणा उदयसिंह को बनवीर का हत्यारा बताकर उनके राज्याभिषेक से संबंधित तथ्यों में भी छेड़छाड़ की गई। समाचार पत्र में इन सब विषयों के छपने के बाद भी क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने संघ नेतृत्व से अनुमति लेकर इस विषय को उठाने का निर्णय लिया। 19 जून को राजस्थान के मुख्यमंत्री महोदय एवं कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष के नाम ज्ञापन भेजे गए एवं प्रदेश की अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से ऐसे ही पत्र उपर्युक्त दोनों को भिजवाने का निर्णय लिया। इस मुहिम में सभी संगठनों का सहयोग मिलना प्रारंभ हुआ। सभी जाति समाज के सैंकड़ों सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों ने मुख्यमंत्री जी को ज्ञापन प्रेषित कर फाउंडेशन को भी उसकी प्रति उपलब्ध करवाई। ऐसे अधिकांश पत्र फाउंडेशन के फेसबुक पेज पर उपलब्ध हैं। इसी बीच 23 जून को सोशल साईट ट्विटर पर इस विषय में प्रातः 11 बजे से सायं 5 बजे तक ट्विटर ट्रेंड चलाया गया। सभी लोगों का सक्रिय सहयोग मिला एवं ट्रेड लगभग पूरे दिन टोप 30 ट्रेंड्स में बना रहा। कई बार तो तीसरे चौथे नंबर पर भी पहुंचा। ट्रेड की स्थिति मजबूत होते ही मुद्दा राष्ट्रीय मीडिया एवं बड़े नेताओं तक पहुंचा। अनेक बड़े नेताओं, केन्द्रीय मंत्रियों ने भी इस विषय पर राजस्थान सरकार के इस कृत्य की आलोचना की। सभी राष्ट्रीय चैनल्स एवं अखबारों ने मुद्दे को यथा संभव स्थान दिया। अगले चरण में राजस्थान के जनप्रतिनिधियों ने भी मुख्यमंत्री को पत्र लिखने प्रारम्भ किए। भाजपा एवं कांग्रेस के अनेक बड़े नेताओं ने अपना विरोध जताया।

आनंदपाल प्रकरण में चार्जशीट पेश

(फिर से उजागर हुआ सीबीआई का फोरा चरित्र)

केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो भारत सरकार का प्रभावी अन्वेषण ब्यूरो माना जाता है लेकिन केन्द्र सरकार द्वारा इसके दुरुपयोग के कारण इसे केन्द्र में सरकार पर काबिज राजनीतिक लोगों का तोता भी माना जाता है। अर्थात यह माना जाता है कि यह वही करती है जो सत्ता पर काबिज लोग कहते हैं। इसको पुष्ट करने वाले अनेक बदनाम उदाहरण सूचीबद्ध किए जा सकते हैं जब अपने राजनीतिक आकाओं के कहने पर इसने अपनी साख पर बट्टा लगाया। आनंदपाल प्रकरण में राजपूत समाज ने उसके एनकाउंटर की सीबीआई जांच की मांग के लिए आंदोलन किया और सरकार ने आंदोलन के बाद जांच सीबीआई को सौंपी भी। लेकिन सामाजिक नेतृत्व को अपनी अंगुलियों पर नचाने की चाह रखने वाले राजनेताओं ने इस अवसर को भी अपनी इस कुत्सित चाह को पूरा करने के लिए भुनाया और एनकाउंटर के साथ-साथ सांवरदा में हुई घटनाओं की एफआईआर भी सीबीआई को सौंपी और सीबीआई ने एक सामान्य पुलिस चौकी के सिपाही के स्तर की जांच कर उस संघर्ष समिति से जुड़े सभी नेताओं को दंगा भड़काने के आरोपी बनाकर चार्जशीट दाखिल कर दी है।

वह पूरा आंदोलन ही एक अनियंत्रित सा युवा जोश था और उस अनियंत्रित युवा जोश के कारण समाज और राष्ट्र का कोई बड़ा नुकसान न हो, उस आंदोलन में केवल जोश के कारण अनेकों युवाओं का जीवन बर्बाद न हो इसलिए समाज का संजीदा नेतृत्व उस आंदोलन से जुड़ा। उन्होंने उस आंदोलन को संयमित एवं समझदारी पूर्ण बनाने का पूरा प्रयास किया। हालांकि वे कितने सफल हुए यह अलग विषय था लेकिन उनके प्रयास की संजीदगी में कोई कमी नहीं थी। उसी संजीदगी का परिणाम हुआ कि अनियंत्रित भीड़ का स्वरूप ले चुके आंदोलन की दिशा को ठीक करने का प्रयास हुआ और अंत में सरकार से समझौता हुआ। लेकिन सीबीआई ने क्या किया? जो आग को बुझाने के लिए पानी लेकर गए थे उनके ही आग लगाने का दोषी करार दे दिया गया। इसीलिए पूर्व में लिखा है कि सीबीआई की जांच एक चौकी के सिपाही के स्तर की भी नहीं है। पूरे दो वर्ष तक सीबीआई ने क्या जांचा यह भी पता नहीं? जो उस आंदोलन के दौरान वहां नहीं थे उनको भी दंगा भड़काने का दोषी करार दे दिया। जो वहां पुलिस प्रशासन के साथ बैठकर मामले को शांति से निपटाने का प्रयास कर रहे थे उनको भी दंगा भड़काने वाला बता दिया। जिन्होंने वहां मंच से एक शब्द नहीं बोला उन्हें भी आरोपी बना दिया। जो मंच पर गए तक नहीं उनको भी दोषी करार दे दिया गया। इससे यही लगता है कि सीबीआई इसमें किसी भी कोण से गंभीर नहीं थी। सीबीआई को जैसे एक टास्क दिया था कि आपको इतने समय बाद इन इन लोगों को आरोपी बनाकर चार्जशीट दाखिल करनी है और उन्होंने कर दी। इस प्रकार पूरी कवायद पूर्व निर्धारित सी लगती है। राजनेता चाहते हैं कि समाजों के नेता सदैव उनके अनुगामी बनकर रहें और इसलिए ऐसे हथकंडे अपनाते हैं। लेकिन वे ऐसा करने में सफल नहीं होंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

यथावत रहेंगे सहयोगियों के दायित्व

श्री क्षत्रिय युवक संघ में प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर के बाद सहयोगियों को दायित्व दिए जाते हैं। इस बार कोरोना संकट के कारण शिविर स्थगित किया गया है। इसलिए नए दायित्वों का निर्धारण नहीं हो सका। ऐसे में आगामी परिवर्तन तक विगत वर्ष के दायित्वाधीन स्वयंसेवक ही कार्यकारी, संभाग प्रमुख, प्रांत प्रमुख आदि का दायित्व संभालते रहेंगे।

संचालन प्रमुख,
श्री क्षत्रिय युवक संघ

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउण्डेशन के सहयोगियों की केन्द्रीय बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन से जुड़े सहयोगियों की जिला टीमों के साथ 21 जून को विगत बैठक के बाद किए गए कार्यों एवं आगामी दिनों में किए जाने वाले कार्यों को लेकर गुगल मीट के माध्यम से बैठक की गई। लगभग डेढ घंटे तक चली इस बैठक में जिला टीम के सहयोगियों ने विगत बैठक में लिए गए निर्णयों पर हुए कार्यों की समीक्षा प्रस्तुत की। फाउंडेशन के उद्देश्य की ओर बढ़ने के लिए चिह्नित छह बिन्दुओं में से किस-किस बिन्दु पर प्रयास हुआ उसकी भी जानकारी दी गई। आगामी दिनों की कार्य योजना में मुख्य रूप से राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा अपने पाठ्यक्रम में महाराणा प्रताप एवं मेवाड़ को लेकर किए गए दुर्भावना पूर्ण बदलावों को लेकर चर्चा की गई। सबको बताया गया कि शिक्षा मंत्री

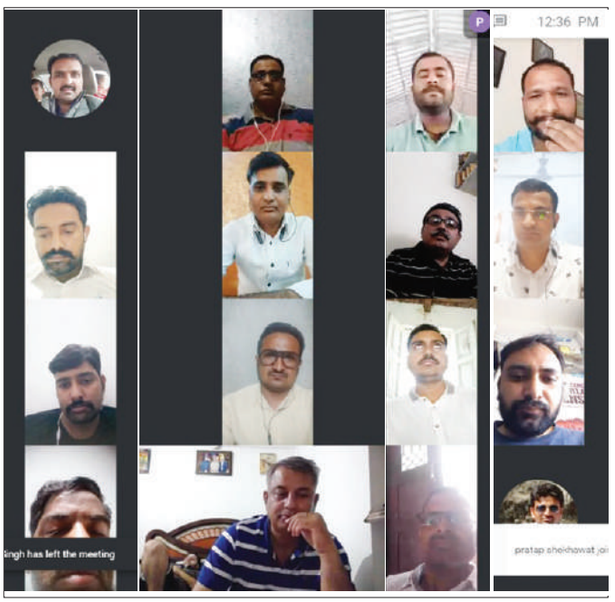

की दुर्भावनावंश 2019 के पाठ्यक्रम में ही प्रताप के गौरव को कम करने के लिए अनेक यथार्थ तथ्य हटा दिए गए। विगत 18 जून को हल्दीघाटी दिवस पर एक राष्ट्रीय दैनिक में उस बदलाव की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए 2020 में किए गए बदलावों को लेकर प्रश्न उठाया और उन विकृतियों को उजागर किया है। राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग के मुखिया अपनी हीन भावना के कारण हमारे गौरवशाली अतीत के प्रति कुंठित है और अपनी उस कुंठा को पाठ्यक्रम के माध्यम से हमारी आने वाली पीढी को परोस रहे हैं। ऐसे में हमने यदि प्रभावी विरोध नहीं जताया तो उन तथ्यों को ही सही मान लिया जाएगा। इसलिए श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय टीम ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्गदर्शन में 'हमारा इतिहास : हमारा गौरव' अभियान शुरू प्रारंभ किया है। सभी सहयोगियों को इस अभियान की विस्तार से जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि हमे संवैधानिक तरीकों का इस्तेमाल करते हुए हमें इस मुद्दे को आमजन का मुद्दा बनाने का प्रयास करना है। सर्वसमाज के सामाजिक संगठनों, राजनेताओं, जनप्रतिनिधियों, विशिष्ट जनों को हमारी इस मुहिम में भागीदार बनाना है। सोशल मीडिया का भरपूर उपयोग करना है। इसके अलावा आगामी समय में केन्द्रीय स्तर पर होने वाली मार्गदर्शन वेबिनार से अधिकतम लोगों को जोड़ने का प्रयास करना है। इस गुगल मीट में फाउंडेशन के कार्य क्षेत्र वाले सभी जिलों के सहयोगियों सहित केन्द्रीय टीम के सदस्य जुड़े।

छात्र नेताओं की गुगल मीट

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की नागौर टीम द्वारा नागौर के छात्र नेताओं की एक गुगल मीट 21 जून को आयोजित की गई जिसमें नागौर जिले से विगत 5-6 वर्षों में बने छात्र नेता शामिल हुए। मेड़ता सिटी महाविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष जितेन्द्रसिंह आकेली ने सबसे सम्पर्क किया एवं इस बैठक के लिए आमंत्रित किया। इनमें नागौर जिले के विभिन्न महाविद्यालयों के अलावा नागौर जिले से बाहर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर आदि स्थानों पर छात्र राजनीति में सक्रिय रहे नागौर जिले के छात्र नेता भी शामिल हुए। फाउंडेशन की तरफ से इस कार्य का दायित्व संभाल रहे सहयोगी रामसिंह चरकड़ा ने बताया कि छात्र राजनीति में सक्रिय रहे संभावनाशील युवाओं की ऊर्जा को संयोजित कर उसका सकारात्मक उपयोग करने के लिए फाउंडेशन यह प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन की चाह है कि आप जब आपसी परिचय, सामंजस्य एवं सहयोग से एक-दूसरे को राजनीति में आगे बढ़ने में सहयोग करें। स्वयं एक-दूसरे के गॉड फादर बनें। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष नारायणसिंह गोटन ने नागौर जिले की राजनीति की चर्चा करते हुए सामूहिक प्रयासों की महत्ता बताई। केन्द्रीय टीम के सहयोगी अरविंदसिंह बालवा ने नागौर जिले में फाउंडेशन के कार्य की जानकारी दी। छात्र नेता इस काम में कैसे सहयोग कर सकते हैं इस बारे में भी जानकारी दी। जितेन्द्रसिंह आकेली ने बताया कि हम इस सम्पर्क को निरन्तर रखेंगे। स्थितियां सामान्य होने पर जिला स्तर पर छात्र नेताओं की एक कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इनके अलावा बैठक में जुड़े छात्र नेताओं ने भी अपने विचार रखते हुए इस प्रयास में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। एक घंटे से अधिक चली इस बैठक में जुड़े छात्र नेताओं को फाउंडेशन के उद्देश्य एवं उस ओर बढ़ने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई।

नागौर के पत्रकारों की बैठक

नागौर जिले के राजपूत पत्रकारों की एक गुगल मीट 14 जून को श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की नागौर टीम द्वारा आयोजित की गई। इस बैठक में नागौर के विभिन्न अंचलों में विभिन्न समाचारों माध्यमों में कार्यरत पत्रकार शामिल हुए। बैठक के प्रारम्भ में सबके परिचय के बाद फाउंडेशन की स्थापना, उसके उद्देश्य एवं करणीय कार्यों के बारे में जानकारी दी गई। केन्द्रीय टीम के सहयोगी अरविन्द सिंह बालवा ने नागौर जिले में चल रहे फाउंडेशन के कार्यों के बारे में जानकारी दी। पत्रकारों की बैठक का उद्देश्य बताते हुए कहा गया कि फाउंडेशन चाहता है कि आप सभी में आपसी सम्पर्क एवं सामंजस्य विकसित हो और आप सभी अपने-अपने स्थान पर एक दूसरे के सहयोग से मजबूत बनें। इसके लिए आपको एक प्लेटफार्म उपलब्ध करवाने हेतु यह बैठक आयोजित की गई है। साथ ही आपकी ऊर्जा का समाज के लिए

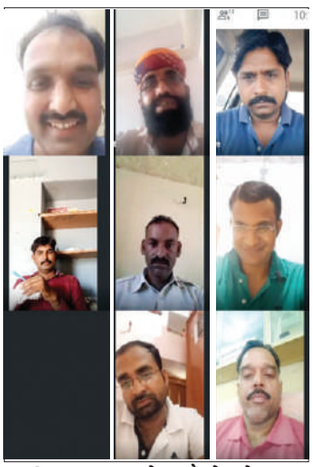

अधिकतम उपयोग कैसे हो, इस विषय पर भी आपको अपनी भूमिका तय करनी चाहिए। बैठक में जुड़े पत्रकारों ने अपनी तरफ से कैसे सहयोग कर सकते हैं, इसकी जानकारी दी। साथ ही आपसी सम्पर्क एवं सामंजस्य के लिए क्या-क्या किया जा सकता है उन बिन्दुओं पर अपने सुझाव दिए। समाज के नए लोगों को इस क्षेत्र में कैसे जोड़ सकते हैं इस विषय पर भी चर्चा हुई।

महेसाना प्रांत व जालोर संभाग की वर्चुअल बैठक

संघ के महेसाना (गुजरात) प्रांत के सहयोगी स्वयंसेवकों की वर्चुअल बैठक 14 जून को अपराह्न 4 बजे आयोजित की गई जिसमें संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाना ने कोरोना काल में भौतिक रूप से न मिलने की मजबूरियों के बीच सबसे सम्पर्क रखने के लिए किए जाने वाले उपायों पर चर्चा की एवं संघ की केन्द्रीय वर्चुअल शाखा में निरन्तर जुड़े रहने का निर्देश दिया।

इसी प्रकार 14 जून को ही जालोर संभाग के भीनमाल प्रांत के उभरते हुए स्वयंसेवकों की एक गुगल मीट रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने वर्चुअल शाखा में नियमित जुड़े रहने व संघ साहित्य पढ़ने के लिए निर्देशित किया। प्रांत प्रमुख नाहरसिंह जाखड़ी ने इस परिस्थिति में सोशल मीडिया की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। साथ ही बताया कि हम किस प्रकार इसके उपयोग से संघ कार्य को गति दे सकते हैं।

प्रवेश चालू सीधे 10वीं करें
उम्र बन्धन नहीं N.I.O.S T.C.की जरुरत नहीं
कोई भी कक्षा फेल या पास किसी भी उम्र में बिना T.C. आधार कार्ड से सीधे 10वीं पास करें, 10वीं पास कर 12वीं कला, वाणिज्य, विज्ञान वर्ग में करें।
"A" ग्रेड युनिवर्सिटी से पत्राचार द्वारा घर बैठे B.A, B.Com. M.A, योगा में M.A, अच्छे अंको से पास करें।
NIOS भारत सरकार का सबसे बड़ा सरकारी ओपन बोर्ड है।
5 वीं, 8 वीं पास महिला, बुजुर्ग सीधे 10 वीं पास करें
सांगसिंह राठौड़
(प्रबंधक व समन्वयक)
9783202923, 8209091787
आदर्श सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
सोलंकियातला तह. शेरगढ़, जोधपुर
बोर्ड फॉर्म छात्र अभी फार्म भरकर सितम्बर में परीक्षा देकर इसी साल अगली कक्षा में प्रवेश लें।
E-Mail : adarshsktala@gmail.com www.adarshshoolsktala.com

शाखामृत

कोरोना संकट के कारण उत्पन्न परिस्थिति के कारण वर्चुअल शाखा का प्रारंभ 13 मई को किया गया जो निरंतर जारी है। इसके माध्यम से वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी तथा अजीतसिंह जी धोलेरा द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी की पुस्तक 'साधक की समस्याएं' तथा 'गीता और समाजसेवा' पर चर्चा की जा रही है। 15 जून से 28 जून तक की शाखा में मिला मार्गदर्शन का विवरण प्रस्तुत है :

'साधक की समस्याएं' पुस्तक के 'सुरक्षा का भय' प्रकरण पर आगे चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि वर्तमान में भी मानव-मानव में, व्यक्ति व समाज में, समाज-समाज में तथा राष्ट्र-राष्ट्र में संघर्ष के विद्यमान होने का कारण यही है कि हमने गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बताए हुए विश्वस्त मार्ग का निर्भयतापूर्वक पालन नहीं किया। अपने भय को दूर करने के लिए मनुष्य ने युद्ध का मार्ग अपनाया, परन्तु अनवरत युद्धों के बाद भी वह भय से मुक्त नहीं हो पाया। पराजित अपने जीवन निर्वाह के लिए भयभीत रहा तो विजयी भी प्राप्त की हुई उपलब्धि की सुरक्षा के लिए भयग्रस्त रहा। युद्ध की विभीषिकाओं ने मनुष्य को सोचने पर भी विवश किया और इसी प्रक्रिया में सभ्यता का विकास भी हुआ परंतु उस सभ्यता के शिखरों पर भी रक्त के छींटे स्पष्ट दिखाई देते हैं। मनुष्य ने राष्ट्रों के संघ बनाये, निशस्त्रीकरण के लिए संधियां की परंतु फिर भी मनुष्य अपने भय से आज भी मुक्त नहीं हो सका है। इसके पीछे कारण है मनुष्य की सफलता के प्रति उत्कट आसक्ति। मानव ने बुद्धि का प्रयोग करके इन समस्याओं के समाधान का प्रयत्न किया किन्तु परिवर्तनशील भिन्नताओं को संगठन व स्थिरता प्रदान करने वाली नित्य व अपरिवर्तनशील एकता की खोज हृदयगत साधना ही कर सकती है। इस एकता का बोध भौतिक विज्ञान नहीं करवा सकता। भय जन्य संघर्षों से अथवा रक्तरंजित क्रांतियों से भी यह बोध संभव नहीं है। अपनी आवश्यकताओं को अवैज्ञानिक रीति से कम कर के संन्यासी बन जाने से भी यह बोध नहीं हो सकता। इसका उपाय तो सम्यक दर्शन ही है, इसी से मानव की भ्रांतियां दूर हो सकती हैं। परंतु आज के कोलाहलपूर्ण वातावरण में उस नीरवता की खोज करना कठिन हो गया है जो सम्यक दर्शन को उपलब्ध करवा सकती है। संघ इसी सम्यक दर्शन की साधना के लिए शाखा, शिविर आदि के माध्यम से वातावरण उपलब्ध करवा रहा है। आगे उन्होंने साधना में वास्तविक व निर्मूल भयों में अंतर समझाते हुए बताया कि ध्येय नाश का भय, तमसाछन्न प्रवृत्तियों के आक्रमण का भय, निम्न धरातलों का भय, जड़ता से किए जाने वाले संघर्ष के समाप्त होने का भय आदि वास्तविक भय हैं तथा इनसे सावधानी रखना आवश्यक है। किंतु प्रकाश और ज्ञान से भय निर्मूल है, जो हमारा मार्गदृष्टा, प्रेरक व सम्बल हो उससे भय की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि ये तो हमारी साधना की सहायक चेतन शक्तियां है।

शाखा की अगली कड़ियों में 'सुखात्मक दुर्बलताएँ' नामक प्रकरण पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि भिन्न भिन्न व्यक्तियों में सुखानुभूतियों का स्तर भिन्न भिन्न होता है। मनुष्य के विकास के साथ उसके सुख का स्वरूप भी बदलता है। जैसे जैसे मनुष्य विकास के उच्च धरातलों की ओर बढ़ता है, उसकी सुखानुभूति का स्तर भी विकसित होकर आत्मबलिदान की ओर बढ़ता है। संस्कृति और सभ्यता इसी प्रकार मनुष्य को उसकी मूल प्रवृत्तियों से संघर्ष करना सिखाकर उसे निस्वार्थ और त्यागी बनाने का प्रयत्न करती है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक मनुष्य में आत्मप्रदर्शन की मूल प्रवृत्ति होती है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति सम्मान प्राप्त करना चाहता है। हम यदि अपने से छोटे व्यक्ति से अथवा अविकसित साधक से सम्मान प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं तो हम गलत मार्ग पर चल पड़ते हैं। साधक को सदैव गुरुजनों और श्रेष्ठ जनों से ही सम्मान प्राप्त करना चाहिए। उनका सम्मान पाने के लिए हमें संघर्ष करना होता है और जब हम संघर्ष नहीं कर सकते तो कुंठाग्रस्त होकर खलनायक बनने का प्रयास करते हैं अर्थात अपने से नेष्ट का सम्मान पाने के लिए प्रयत्न करने लग जाते हैं। साधक को कीमत चुकाकर ही अपने गुरुजनों का सम्मान

प्राप्त करना चाहिए तथा आगे चलकर व्यक्तिगत सम्मान प्राप्ति की चाह को सामाजिक सम्मान की चाह में निमज्जित कर देना चाहिए।

इसी प्रकार काम भी हमारी मूल प्रवृत्ति है जो उन्नत होकर मातृत्व और शिशुभाव में बदलती है। मातृत्व और शिशुभाव की प्रवृत्तियों को साधना द्वारा और उन्नत करने पर यह प्रेम और भक्ति के रूप में विकसित होती है। अपनी उन्नत अवस्था में आकर काम मानव जाति की सेवा में नियोजित होता है। हम जिन गुणों अथवा प्रवृत्तियों को नकारात्मक मानते हैं उनका भी जीवन को संतुलित बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। अंधकार के कारण प्रकाश की, उपेक्षा के कारण प्रेम की कीमत होती है। भोजन में नमक की भांति साधना में नकारात्मक गुणों की उपस्थिति होनी आवश्यक है। यद्यपि इनकी मात्रा अधिक होते ही जीवन का संतुलन बिगड़ भी सकता है, इसके लिए सदैव सावधान रहकर अनुभूतियों को अर्थ प्रदान करने की क्षमता विकसित करनी आवश्यक है। सभी मनुष्यों को प्रेम की प्यास होती है किंतु इसकी पूर्ति ईश्वरीय प्रेम से ही सम्भव है, क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम का एकमात्र उद्गम है।

इसी प्रकार हँसी भी सुखात्मक मूल प्रवृत्ति है जो असामाजिक होने पर समस्या बन जाती है। हंसी के असामाजिक होने का अर्थ है दूसरों की कमियों पर हंसना। दूसरों की कमियों पर हंसने से हम परोक्ष रूप में उन कमियों का अपने भीतर आरोपण कर लेते हैं। दूसरे के दोषों को देखना अपने आप में एक गंभीर दोष है जिससे साधक को सदैव बचना चाहिए। इसके लिए साधक को अपने भीतर उतरकर आत्मिक सौंदर्य का दर्शन करना चाहिए साथ ही अलक्षित बाह्य सौंदर्य को देखने का भी अभ्यास करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई अच्छाई अवश्य होती है, साधक को उसी पर दृष्टि रखनी चाहिए। ऐसा करने पर हंसी मनोरंजन के स्थान पर लोकरंजन का माध्यम बनेगी और यही उसका उन्नत स्वरूप है। प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर की विशिष्ट विभूति मानकर ही चिंतन धारा को मोड़ा जा सकता है।

वर्चुअल शाखा की अगली कड़ियों में 'बौद्धिक विकार' नामक प्रकरण पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जिज्ञासा, विनय, घृणा और रचना मनुष्य में सामान्यतया पाई जाने वाली ज्ञानात्मक मूल प्रवृत्तियां है। औद्योगिक सभ्यता ने बुद्धि और ज्ञान के अंतर को नगण्य समझने की भूल की है क्योंकि बुद्धि चेतन मस्तिष्क की कृति है जबकि ज्ञान अवचेतन मस्तिष्क का भाग है। ज्ञान हमारे भीतर पहले से ही अवस्थित है इसलिए उसकी अनुभूति बाहर से नहीं हो सकती। पुस्तकें तथा उपदेश ज्ञान की खोज की केवल प्रेरणा दे सकते हैं, उसकी अनुभूति नहीं करवा सकते। औद्योगिक सभ्यता ने बौद्धिक विकास पर अत्यधिक बल देकर आध्यात्मिक पक्ष की घोर उपेक्षा की है। वस्तु ज्ञान अर्थात बौद्धिक ज्ञान केवल साधन है साध्य नहीं। बुद्धि और ज्ञान के सूक्ष्म भेद को अर्द्धसभ्य और असंस्कारी व्यक्ति नहीं समझ सकता इसी कारण से साधना के क्षेत्र में कुछ लोग असहमत और विरोधी हो जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति तर्क से ही पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करता है तो ऐसा संभव नहीं है क्योंकि तर्क स्वयंसिद्ध वस्तुओं से ही प्रारम्भ होता है। तर्क इंद्रियानुभूति के क्षेत्र में की जाने वाली एक बौद्धिक चेष्टा है अतः ऐसे विषय जिनकी अनुभूति इन्द्रियों से नहीं हो सकती उनका विश्लेषण केवल तर्क और बुद्धि से नहीं हो सकता। बुद्धि जब मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर हावी होने का प्रयास करती है तो वह सर्वप्रथम मनुष्य की जिज्ञासा की प्रवृत्ति पर आक्रमण करके उसे छिद्रान्वेषण की ओर मोड़ देती है। बुद्धि साधक के अहं के साथ मिल कर उसे साधना से च्युत कर देती है। इस समस्या का समाधान आत्मनियंत्रण से ही संभव है। दूसरों के दोषों को देखने से स्वयं को रोकना तथा अपनी समस्त ऊर्जा को अपने उत्तरदायित्व के पालन में नियोजित करना आवश्यक है क्योंकि अन्यों की कमियों को देखकर उनमें सुधार का प्रयत्न करना शिक्षक का कार्य है, साधक का नहीं। विकारग्रस्त बुद्धि साधक की विनय तथा आधीन होने की मूल प्रवृत्ति को भी विकृत कर देती है। इससे साधक के लिए ज्ञानप्राप्ति के द्वार भी बंद हो जाते हैं। अहंकारवश मूर्खता को ही समझदारी मानने की भूल साधक कर बैठता है। हमारे भीतरी ज्ञान की जागृति के लिए भी प्रेरणा बाहर से ही मिलती है चाहे वह किसी पुस्तक से हो अथवा किसी के आचरण से। परंतु विकारग्रस्त बुद्धि का गुलाम बन जाने से व्यक्ति अन्य किसी से शिक्षण और प्रेरणा लेने में अक्षम बन जाता है। विकृत बुद्धि सद-असद के विवेक की क्षमता भी खो देती है। ऐसे में सत्य-असत्य की अपेक्षा पक्ष और विपक्ष ही महत्त्वपूर्ण बन जाता है। प्रेरणा का स्वागत करने की अपेक्षा विकारग्रस्त बुद्धि अपनी रक्षा का उपक्रम प्रारम्भ कर देती है। साथ ही रचना की मूल प्रवृत्ति अर्थात कर्म करने की प्रवृत्ति पर भी विकारग्रस्त बुद्धि आक्रमण कर देती है और साधक को निष्क्रिय बना देती है। इसलिए निरंतर कर्मशील रहना ही साधना की सक्रियता की कसौटी है। यदि कर्मशील नहीं होकर साधक उदासीन हो जाता है तो वह धीरे-धीरे साधना पटल से गायब हो जाता है। इसलिए हर परिस्थिति में कर्म नहीं छोड़ना है। यदि हमारा विचार विरोधी बन रहा है तो विरोध में कर्मशील होना है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संपादकीय

आदर्श की हांक और यथार्थ की हत्या

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'साधक की समस्याएं' के प्रकरण पांच 'सुरक्षा का भय' के प्रारंभ में लिखा कि 'यथार्थ और आदर्श' में बहुत अंतर रहा है और रहेगा भी। आदर्श की हांक में यथार्थ की निर्मम हत्या कर देने से समस्या का समाधान नहीं होता। किसी भी समस्या के समाधान का यह एक सम्यक तरीका है कि यथार्थ और आदर्श दोनों के दृष्टिकोण से समस्या के सभी पहलुओं को समझा जाए एवं उसके बाद समस्या के समाधान की तरफ बढ़ा जाए। पूज्य तनसिंह जी ने इस पुस्तक में जिन समस्याओं एवं उनके समाधान की चर्चा की है उन सभी में इसी दृष्टिकोण ने प्रधानता पाई है। लेकिन क्या हमारे व्यवहारिक जीवन में हम ऐसा कर पाते हैं? क्या हमारे आसपास ऐसा होता हुआ पाते हैं? हम हमारे चारों ओर एक असंतुलन पाते हैं जिसमें कहीं आदर्श की हांक में यथार्थ की हत्या हो रही होती है तो कहीं यथार्थ के बहाने आदर्श कोने में दबा पड़ा रहता है। आदर्श और यथार्थ का यह असंतुलन ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में असंतुलन पैदा करता है। ऐसे अनेक उदाहरण हम राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के जीवन में देख सकते हैं। पंचशील का सिद्धान्त एक आदर्श था, लेकिन उसकी आड़ में यथार्थ की उपेक्षा ने हमें 1962 का युद्ध झेलने को मजबूर किया। इसी प्रकार नोटबंदी की बात को यदि एक आदर्श की हांक मानें कि काला धन शून्य किया जाना चाहिए लेकिन यथार्थ की अवहेलना ने अर्थव्यवस्था को जमीन पर लाने में योग दिया। लेकिन दूसरी तरफ इसी यथार्थ को प्राथमिकता देवें कि हमें अर्थव्यवस्था ही ठीक करनी है, चाहे इसके लिए संप्रभुता से समझौता करना पड़े तो यथार्थ में अतिरेक में आदर्श का हनन है। ऐसे अनेक उदाहरण ढूंढ सकते हैं देश के जीवन से जिनमें आदर्श एवं यथार्थ के असंतुलन ने समस्या खड़ी की है। ऐसा ही हम समाज के जीवन में देख सकते हैं। गांव में रहना, अपनी जमीन से जुड़ा रहना एक आदर्श है लेकिन उसके लिए हम रोजगार आदि आवश्यकताओं के लिए ही गांव नहीं छोड़ें तो यह असंतुलन पैदा होगा लेकिन दूसरी तरफ यदि हम रोजगार, शिक्षा आदि के नाम पर गांव, जो हमारी पहचान का आधार है, को सदा के लिए भूला देते हैं तो भी असंतुलन पैदा होगा। विवाह में अपनी पुत्री को भेंट देना, एक आदर्श व्यवहार है लेकिन उसके लिए अपनी क्षमता से बाहर जाकर बर्बादी मोल लेकर उपहार देना यथार्थ की हत्या है। लेकिन पूर्वजों की इस सुन्दर व्यवस्था को भुलाकर भाई-बहिन के बीच संपति के बंटवारे के लिए न्यायालयों में चक्कर लगाना उस आदर्श की उपेक्षा का ही परिणाम है।

व्यक्तिगत जीवन में भी हमें ऐसे उदाहरण कदम दर कदम देखने को मिलते हैं। किसी एक अच्छाई के आदर्श के कारण यथार्थ परिस्थितियों की अवहेलना करना व्यक्तिगत जीवन को दुखदायी ही बनाता है। पूरा महाभारत ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जब आदर्श की हांक में यथार्थ की हत्या हुई और परिणामतः भीषण नरसंहार हुआ। लेकिन आज के जीवन में हम यथार्थ की आड़ में जिस प्रकार सभी आदर्शों की बलि देने में तत्पर रहते हैं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता को पोषित करते हैं, व्यक्ति के नाम पर समाज की बलि देने को तत्पर होते हैं वह भी तो आदर्श की हत्या ही है। इस प्रकार हम हमारे आसपास के ऐसे अनेकों उदाहरणों से समझ सकते हैं कि किस प्रकार आदर्श और यथार्थ का असंतुलन हमारे जीवन को असंतुलित कर रहा है। हमारे समाज को असंतुलित कर रहा है एवं हमारे देश और दुनिया को असंतुलित कर रहा है। पूज्य तनसिंह जी के दर्शन ने इस असंतुलन को सदैव नकारा है। उनका पूरा शिक्षण जहां आदर्शों का मूल्य मानता है वहीं यथार्थ की उपेक्षा भी नहीं करता। जैसा कि लेख के प्रारंभ में जिक्र किया गया है कि पूज्य श्री द्वारा लिखित पूरा साहित्य यथार्थ और आदर्श का सुन्दर मेल है। वैसे ही उनकी विचारधारा का पार्थिव स्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ भी आदर्श और यथार्थ का सुन्दर मेल है। यहां ना ही तो व्यक्ति के लिए समाज को छोड़ने की बात होती और ना ही समाज के लिए व्यक्ति को। संघ अपने परिवार को भी यथोचित महत्व देना सिखाता है तो समाज को भी। संघ का आदर्श समाज के लिए परिवार छोड़ना नहीं है तो परिवार के लिए समाज को भुलना भी नहीं है। न आदर्श का अतिरेक है और ना ही यथार्थ के नाम पर अतिरेक। यथार्थ कभी अतिरेक नहीं होता बल्कि उसके नाम पर ही हम अपनी कमजोरियों को छिपाते हैं इसी प्रकार आदर्श में भी कभी अतिरेक नहीं होता बल्कि उसकी हांक में ही अतिरेक होता है। हम सौभाग्यशाली है कि हमें इन सभी अतिरेकों से बचते हुए व्यवहारिक मार्ग उपलब्ध है जिसे पूज्य तनसिंहजी ने हमारे लिए प्रस्तुत किया है। आएं! अपने सौभाग्य को पहचानें और उस

खरी-खरी

बंटे हुए भारत की विभाजित प्रतिक्रिया

किसी भी देश की सीमाओं पर बाहरी आक्रमण पूरे राष्ट्र पर आक्रमण होता है। ऐसा आक्रमण राष्ट्रीय समस्या होती है। जो समस्या राष्ट्रीय होती है वह राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक की समस्या होती है और प्रत्येक नागरिक में पक्ष भी होता है और विपक्ष भी होता है। प्रत्येक नागरिक की बात आने पर तथाकथित भक्त भी शामिल हो जाते हैं और उन भक्तों की मजाक उड़ाने वाले भी शामिल होते है। (यहां भक्त का अर्थ भगवान के भक्त नहीं बल्कि आजकल सोशल मीडिया पर उपजी नई प्रजाति है जो राजनेताओं की भक्ति में तल्लीन है।) ऐसे में जो समस्या राष्ट्रीय होती है, राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को स्पर्श करती है उसका मुकाबला भी पूरे राष्ट्र को करना पड़ता है। एक होकर करना पड़ता है लेकिन ऐसे में राष्ट्र यदि बंटा हुआ हो, उसकी प्रतिक्रिया बंटी हुई हो तो यह उस राष्ट्र का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। आज हमारा राष्ट्र ऐसे ही दुर्भाग्य से गुजर रहा है। 15 जून को चीन की सेना ने भारतीय सेना पर धोखे से आक्रमण किया और हमारे 20 जवान शहीद हो गए। यह हमारी राष्ट्रीय प्रभुता पर आक्रमण था और उसकी प्रतिक्रिया भी एक राष्ट्र की तरह दी जानी थी लेकिन हमारी प्रतिक्रिया एक राष्ट्र की सी प्रतिक्रिया नहीं थी, एक अखंड भारत की सी प्रतिक्रिया नहीं थी बल्कि खंड खंड भारत की बंटी हुई प्रतिक्रिया थी। सरकार के पक्ष में लोगों की प्रतिक्रिया सरकार के पक्ष को मजबूत करने के लिए थी वहीं विपक्ष की ओर उनके पक्ष के लोगों की प्रतिक्रिया चीन की अपेक्षा सरकार के खिलाफ थी जैसे हमारे सैनिकों को सरकार ने मारा है, चीनी सेना ने नहीं। सरकार के पक्ष में अपनी चापलूसी कर सरकार का कृपा पात्र बनने को प्रतिस्पर्धा कर रहे मीडिया की एक प्रतिनिधि ने तो सरकार का बचाव करते हुए अपने जांबाज साथियों को खोने वाली सेना पर ही प्रश्न खड़े कर दिए। सोशल मीडिया पर सरकार के विरोध और पक्ष में तर्क देने वालों की सक्रियता देखकर ऐसा लग रहा था कि हमें चीन के आक्रमण से कोई लेना-देना नहीं है, राष्ट्र की संप्रभुता से कोई लेना देना नहीं है बल्कि उन्हें सरकार के विरोध और समर्थन से ही लेना-देना है।

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'समाज चरित्र' में एक स्थान पर लिखा है कि लोकतंत्र असंगठितों का संगठन है, उसे अपने आपको जीवित रखने के लिए हलाहल विष तैयार करना पड़ता है और आज हमारा देश ऐसे ही हलाहल विष में तैर रहा है। सरकार और उसके समर्थक अपना पूरा तेल निकालकर विपक्ष को कठघरे में खड़ा कर रहे है और विपक्ष सरकार को। राजनेताओं और राजनीतिक दलों का ऐसा प्रयास तो इस व्यवस्था का सामान्य व्यवहार मान लिया गया हालांकि ऐसा मानना भी दुर्भाग्यशाली है लेकिन फिर भी इसे असामान्य नहीं माने तो भी जनता का ऐसा बंटवारा तो निश्चित रूप से पीड़ादायक है। सम्पूर्ण राष्ट्र का ऐसा बंटवारा विगत वर्षों में आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा है। अपनी हार से हताश विपक्ष 6 वर्ष बाद भी अभी तक अपनी हार का पचा नहीं पा रहा है और बचकानी हरकतें कर इस राष्ट्रीय बंटवारे को बढ़ावा देता है वहीं सरकार में बैठे लोग श्रेय लेने की होड़ में इतने आत्ममुग्ध हैं कि स्वयं को ही राष्ट्र मानने लगे हैं। जहां सरकार ही राष्ट्र बन जाती है वहीं साधन ही साध्य बन जाया करता है। आज सरकार के समर्थक लोग इस प्रकार का व्यवहार करते है जैसे सरकार का अस्तित्व ही राष्ट्र का अस्तित्व है। उनके लिए सरकार का बना रहना ही चरम लक्ष्य बन गया है और इसलिए हर राष्ट्रीय संकट को सरकार पर संकट के रूप में देखते हैं और इसी प्रकार सरकार पर संकट को राष्ट्र पर संकट के रूप में प्रचारित करते हैं। पक्ष और विपक्ष में बंटा यह देश यह भूल जाता है कि पक्ष और विपक्ष साधन है, साध्य नहीं। राजनीतिक दल और उनके नेता राष्ट्र के लिए है, राष्ट्र उनके लिए नहीं है। राष्ट्र से वे बड़े नहीं हैं। लेकिन दुर्भाग्य से पक्ष और विपक्ष में बंटा हमारा भारत महान अपने आजकल के नेताओं से कम महान बनता जा रहा है। अपने नेताओं को सबसे बड़ा घोषित करने के उद्यम में हम उन्हें राष्ट्र से बड़ा घोषित करने में लगे हैं और उनके हर निर्णय, हर वक्तव्य के पक्ष में तर्क देने को तत्पर नजर आते हैं। जरा विचार करें कि नेता राष्ट्र के लिए हैं या राष्ट्र नेताओं के लिए है। यदि यह राष्ट्र बचेगा तो नेता तो और पैदा हो जाएंगे लेकिन राष्ट्र ही नहीं बचा तो नेता कहां ठहरेंगे। इसलिए आए अपने आपको किसी नेता या दल से बांधने की अपेक्षा भारत राष्ट्र से बांधे, इसकी महान परम्पराओं से बींधें, इसकी अतुलनीय संस्कृति से बांधे और यदि हम ऐसा बंधन पालना शुरू करेंगे तो हमारा बंटवारा स्वतः समाप्त होगा और एकता की ओर बढ़ेंगे तब हमारी प्रतिक्रिया भी बंटी हुई नहीं होगी। यदि ऐसा होगा तो हमारी उस अखंड प्रतिक्रिया के सामने संसार की कोई शक्ति नहीं ठहर सकती।

शाखामृत-1..... (पृष्ठ तीन का शेष)

(पृष्ठ तीन से लगातार)

हमारी वह विरोध की कर्मशीलता ही उसका औचित्य, अनौचित्य सिद्ध कर सकेगी यदि हमारा विचार विरोधी है तो उसके लिए निरन्तर कर्मशील रहना है क्योंकि कर्मठ व्यक्तियों के लिए कोई मार्ग बंद नहीं होता।

इसी प्रकार 'गीता और समाज सेवा' पुस्तक के सातवें प्रकरण 'सतोगुणीय जातीय भाव पर आगे चर्चा करते हुए माननीय अजीतसिंह धोलेरा ने बताया कि जातीय भाव के लोप हो जाने के कारण ही हमारे देश पर सरलता से अधिकार करने में अंग्रेज सफल हो गए। कालांतर में अंग्रेजों का जातीय भाव तमोगुण को प्राप्त होकर कमजोर पड़ गया तथा भारत स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल हुआ। जातीय भाव स्वयं में एक रजोगुणी प्रवृत्ति है जो अकेली जीवित नहीं रह सकती। यह या तो सत्व की ओर उन्मुख होगी अथवा तम की ओर। जब रजोगुण सत्व के साथ मिलता है तो क्षात्रवृत्ति का उदय होता है और जब वह तमोगुण के साथ मिलता है तो आसुरी वृत्ति का प्रादुर्भाव होता है। पश्चिम में इसी आसुरी प्रवृत्ति को महत्त्व मिला और उसी प्रवृत्ति ने हमारे देश और समाज की शाश्वत मान्यताओं को चुनौती देकर हमारी संस्कृति पर आक्रमण किया। सैकड़ों वर्षों की गुलामी से आई जड़ता के कारण भारत इस संघर्ष में कमजोर पड़ गया और पश्चिम की दूषित विचारधारा यहां भी हावी हो गई। आज हमारे देश में धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, साम्यवाद आदि की अवधारणाएं उसी विचारधारा की उपज हैं। आज देश को, समाज को, संस्कृति को सतोगुणीय जातीय भाव की आवश्यकता है, जो त्याग और बलिदान को पुनः प्रतिष्ठा प्रदान करे। समाज जागृति के लिए अनेकों संस्थाएं कार्य कर रही हैं किंतु यदि वे जातीय भाव को सत्वोन्मुखी बनाने का कार्य नहीं करती तो उनका समाप्त होना निश्चित है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षात्रवृत्ति के निर्माण का कार्य कर रहा है क्योंकि केवल क्षत्रिय की औरों के लिए जीवित रहने की त्यागपूर्ण प्रवृत्ति ही समाज की समस्याओं का समाधान कर सकती है। उन्होंने आगे बताया कि क्षत्रिय व राजपूत में सूक्ष्म भेद है जो हमें नहीं भूलना चाहिए। रज और सत्व में जो अंतर है वही राजपूत और क्षत्रिय में है। यदि राजपूत सत्वगुण की ओर नहीं बढ़ता तो तमोगुण के प्रभाव में आकर आसुरी प्रवृत्ति को प्राप्त होगा।

शाखा के अगले भागों में 'वर्ण व्यवस्था' प्रकरण पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि परमेश्वर की कृति होने से प्रकृति भी अनादि, अनंत और शाश्वत है। किंतु प्रकृति परमेश्वर की भांति अभिन्न और अपरिवर्तनशील नहीं है। प्रकृति प्रतिक्षण परिवर्तनशील है तथा विभिन्नताओं व विचित्रताओं से भरी है। प्रकृति की इन तीनों विशेषताओं का प्रभाव मनुष्य पर भी पड़ता है क्योंकि उसका स्थूल व सूक्ष्म शरीर भी प्रकृति का ही अंग है। इसीलिए मनुष्य में महत्त्वाकांक्षाओं, भावनाओं, आदर्शों, विचारों आदि की इतनी विचित्रता रहती है कि प्रत्येक मानव अनेकताओं से भरे मानव समुदाय में रहकर भी अपनी पृथकता को स्पष्ट अनुभव करता है। मानव की यही पृथकता उसे विशिष्ट बनने की प्रेरणा देती है किन्तु इस प्रक्रिया में महत्त्वाकांक्षाओं आदि का संघर्ष भी जन्म लेता है। यह संघर्ष मानव के जीवन को अस्थिर और अशांत बना देता है। इस समस्या का उपाय मानव की विभिन्नताओं को समायोजित करने वाले सच्चे संगठन से ही सम्भव है। भारतीय मनीषियों ने इस सत्य को समझकर ही भारतीय सामाजिक व्यवस्था का विकास किया और व्यक्ति और समाज को एक दूसरे का पूरक बनाते हुए दोनों के समग्र विकास के लिए वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रतिपादन किया। भारतीय वर्ण व्यवस्था भौतिकता और आध्यात्मिकता का अद्भुत समन्वय है जिसने व्यक्ति-व्यक्ति तथा व्यक्ति-समाज के बीच के सूक्ष्म संघर्षों को नियंत्रित और समायोजित किया। वर्ण व्यवस्था ने व्यक्ति के लिए चारों पुरुषार्थों - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का सहज मार्ग प्रशस्त किया। गीता ने भी संसार को मिथ्या बताने की बजाय उसे ईश्वर रूपी साध्य को प्राप्त करने का साधन बताया है। गीता अपने सामाजिक कर्त्तव्यों के निर्वहन द्वारा परमसिद्धि की प्राप्ति का समर्थन करके वर्ण व्यवस्था की वैज्ञानिकता को सिद्ध करती है। उन्होंने आगे बताया कि हमारा जन्म पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर होता है और जन्म के आधार पर हमारा कर्त्तव्य निर्धारित होता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कल्याणी के चालुक्य

सोमेश्वर प्रथम के बाद कुछ समय के लिए उसका बड़ा पुत्र सोमेश्वर द्वितीय शासक बना। राज्याधिकार को लेकर सोमेश्वर द्वितीय और उसके छोटे भाई विक्रमादित्य षष्ठ में संघर्ष चलता रहा। इस संघर्ष की अन्तिम परिणिति के रूप में विक्रमादित्य षष्ठ कल्याणी के राज सिंहासन पर बैठा, वह सोमेश्वर प्रथम के पुत्रों में सर्वाधिक योग्य था। उसके शासन काल का अधिकांश समय राज्य की उन्नति व समृद्धि में बीता। शासन काल के प्रारम्भ में ही उसे अपने छोटे भाई जयसिंह, जो वनवासी का उप राजा था के विद्रोह का सामना करना पड़ा। जयसिंह के विद्रोह का दमन कर उसे बंदी बना लिया गया परन्तु विक्रमादित्य ने छोटे भाई से उदारता का व्यवहार करते हुए उसे मुक्त कर दिया। इसके बाद उसका संघर्ष नवोदित होयसल शक्ति से हुआ। विक्रमादित्य ने होयसल प्रमुख विष्णुवर्धन को पराजित किया। विक्रमादित्य ने मालवा के शासक उदयादित्य को परास्त किया और बाद में उसके पुत्रों के मध्य हुए उत्तराधिकार के संघर्ष में जगद्देव का समर्थन कर उसे शासक बनाया। उसके लेखों से पता चलता है कि उसने कोंकण प्रदेश पर भी विजय प्राप्त की। विल्हण उसे चोल, परमार, गौड़, कामरूप, केरल, बेंगी का विजेता बताता है। विक्रमादित्य एक शक्तिशाली शासक, कुशल यौद्धा तथा साम्राज्य निर्माता था। वह साहित्य और कला का महान उन्नायक भी था। उसकी राजसभा में विल्हण (विक्रमादेव चरित का रचनाकार) और विज्ञानेश्वर (मिताक्षरा के लेखक) शोभा पाते थे। उसने विक्रमपुर नामक नगर और अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। विक्रमादित्य ने 1126 ई. तक शासन किया। निःसंदेह वह कल्याणी के चालुक्य वंश का महानतम शासक था। विक्रमादित्य के बाद कल्याणी के चालुक्यों का अवनति काल प्रारम्भ हो जाता है। इस अवनति काल में सोमेश्वर चतुर्थ (1181-1189 ई.) ही एक मात्र शक्तिशाली शासक हुआ जिसने अपने अल्प शासन काल में चालुक्य वंश की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया। देवगिरी के यादवों और होयसलो के लगातार आक्रमण ने कल्याणी के चालुक्यवंश का अंत कर दिया। वातापी और कल्याणी के अतिरिक्त कृष्णा और गोदावरी के मध्य का वेंगी का चालुक्य वंश भी अपना पृथक अस्तित्व बनाने में कामयाब हुआ। वातापी के शासक पुलकेशिन द्वितीय ने वेंगी को जीतकर अपने छोटे भाई विष्णुवर्धन को वहां का शासक बनाया। वह एक योग्य और शक्तिशाली शासक था। उसका राज्य वर्तमान विशाखापट्टनम से लेकर उत्तरी नेल्लोर तक फैला हुआ था। विष्णु वर्धन के बाद के अनेक शासक मात्र राज्य को किसी प्रकार सुरक्षित रखने में ही सफल रहे। इस वंश का विजयादित्य द्वितीय (799 ई.- 847 ई.) प्रथम महत्वकांक्षी शासक था, जिसने प्रारंभिक असफलताओं के कारण राज्य को खोने के बाद पुनः प्राप्त किया। उसने राष्ट्रकुटों पर आक्रमण कर उन्हें पराजित किया। उसने दक्षिण की एक अन्य प्रमुख शक्ति गंगों को भी परास्त किया। इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विजयादित्य तृतीय था जो 848 ई. में वेंगी के सिंहासन पर बैठा। उसने दिग्विजय की नीति का अनुसरण करते हुए उत्तर और दक्षिण की अनेक शक्तियों को परास्त किया। उसने नेल्लोर तथा उसके आसपास के बोयो को परास्त कर वेंगी के साम्राज्य में मिला लिया। उसने गंग नरेश पेर्मानडि तथा नोलम्ब के शासक मांगीराज को परास्त किया। उसने राष्ट्रकुट शासक कृष्ण द्वितीय तथा कलचुरी के शंकर गण की सम्मिलित सेनाओं को परास्त किया। उसने राष्ट्रकूटों का राज चिह्न छिन लिया और बल्लभ की उपाधि धारण की। उसने दक्षिण कौशल और चेदि राज्य पर भी विजय प्राप्त की। वह वेंगी के चालुक्य वंश का श्रेष्ठतम शासक, महान विजेता व साम्राज्य निर्माता व कुशल प्रशासक था उसके शासन काल में वेंगी के चालुक्य साम्राज्य का चरमोत्कर्ष था। उसके द्वारा निर्मित साम्राज्य कमजोर उत्तराधिकारियों के बाद भी अगले 200 वर्षों तक बना रहा। 11वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में वेंगी का चालुक्य राज्य चोल साम्राज्य में विलिन हो गया। **(क्रमशः)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

राजस्थान में कांग्रेस और राजपूत

कांग्रेस से जुड़ने में कांग्रेस ही बाधक

राजनीतिक पार्टी के रूप में राजस्थान में कांग्रेस पार्टी और राजपूत समाज के बारे में प्रायः चर्चा होती रहती है। प्रायः यह माना जाता है कि राजपूत राजस्थान में कांग्रेस के विरोध में रहता आया है इसलिए कांग्रेस राजपूतों को अपना नहीं मानती लेकिन इसकी वास्तविकता क्या है इसके लिए हमें आजाद भारत में राजस्थान का राजनीतिक इतिहास देखना चाहिए एवं यह भी देखना चाहिए कि वास्तव में इस दूरी का कारण राजपूत समाज है या कांग्रेस पार्टी है। भारत की आजादी के आंदोलन का नेतृत्व कांग्रेस कर रही थी और यह पूरे ब्रिटिश भारत में सक्रिय थी। लेकिन राजस्थान का अधिकांश हिस्सा ब्रिटिश भारत का हिस्सा नहीं था बल्कि यहां अलग-अलग रियासतें थी और उनका अपना शासन था। इस प्रकार राजस्थान प्रत्यक्षतः ब्रिटिश भारत का हिस्सा नहीं था इसलिए यहां कांग्रेस का भी कोई संगठनात्मक ढांचा नहीं था। आजादी से पूर्व राजस्थान में कांग्रेस की कोई स्वतंत्र सक्रियता नहीं थी।

आजादी के आंदोलन के समय राजस्थान की रियासतों में अलग-अलग प्रजा मंडल बने हुए थे और वे प्रजा मंडल स्थानीय राजाओं और जागीरदारों के विरुद्ध आंदोलनरत थे। इन सभी प्रजा मंडलों में सक्रिय लोग राजाओं, जागीरदारों एवं उनके शासन के खिलाफ थे इसलिए स्वाभाविक रूप से वे राजपूत समाज के खिलाफ थे क्योंकि आम राजपूत उस समय उस व्यवस्था को अपनी मानता था और उससे जुड़ा हुआ था। हालांकि आम राजपूत की भी वही स्थिति थी जो किसी व्यवस्था में आम व्यक्ति की होती है। इस प्रकार प्रजा मंडलों का नेतृत्व करने वाले लोग स्वाभाविक रूप से राजपूत समाज के प्रति नकारात्मक थे। राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलनरत कांग्रेस भी इस प्रजामंडलों के सम्पर्क में भी और राजस्थान में उसके ये ही सम्पर्क सूत्र थे। हालांकि कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व में सेठ जमनालाल बजाज ने राजपूतों को कांग्रेस से जोड़ने की बात चलाई, एक बार केन्द्रीय कार्यकारिणी में प्रस्ताव भी रखा लेकिन केन्द्रीय नेतृत्व ने इस पर गंभीरता नहीं दिखाई। परिणामतः कांग्रेस ने राजस्थान में प्रजा मंडलों को ही अपना प्रतिनिधि माना। इन्हीं प्रजा मंडलों के नेता आजादी के बाद राजस्थान में कांग्रेस के कर्ता धर्ता बने और उनकी राजपूत समाज के प्रति नकारात्मकता शासन के निर्णयों में प्रकट हुई। भूमि अधिग्रहण कानून इसका स्पष्ट उदाहरण है जिसमें अनेक राजपूत परिवारों को भूमिहीन बना दिया गया। कालांतर में यह नकारात्मकता बनी रही और राजपूत समाज को मजबूरन प्रदेश में कांग्रेस के विकल्प के रूप में आए प्रतिपक्ष के साथ रहना पड़ा। वह विकल्प चाहे राम राज्य परिषद हो चाहे स्वतंत्र पार्टी। चाहे जनता दल हो चाहे भारतीय जनता पार्टी। इस बीच अनेक राजपूत नेताओं ने कांग्रेस पार्टी में जाने एवं स्थान बनाने का प्रयास किया लेकिन पार्टी के कर्ता धर्ता बने उन्हीं नकारात्मक नेताओं के कारण अपेक्षित सफलता नहीं मिली। लेकिन राजपूत समाज ने सभी राजनीतिक दलों में समाज के नेतृत्व को उभारने का प्रयास जारी रखा। परिणाम स्वरूप अनेक युवा लोगों ने स्थानीय स्तर पर कांग्रेस पार्टी में अपना स्थान बनाया लेकिन वे प्रदेश स्तर पर अपना स्थान बनाने में उतने सफल नहीं हो पाए क्योंकि वहां वहीं नकारात्मक नेतृत्व के धारा विद्यमान थी। राजस्थान से बाहर के नेताओं का जब भी राजस्थान की राजनीतिक में पर्यवेक्षक आदि रूपों में हस्तक्षेप रहा तो उन्होंने इस पूर्व धारणा से अप्रभावित रहकर कुछ प्रयास अवश्य किया लेकिन आशानुसार सफलता नहीं मिली। ऐसे में सभी राजनीतिक दलों में समाज की उपस्थिति दर्ज करवाने को प्रयासरत सामाजिक नेतृत्व को दोहरा संघर्ष करना पड़ता है। सामाजिक नेतृत्व चाहता है कि सभी राजनीतिक दलों में हमारी उपस्थिति हो लेकिन उसे कांग्रेस के नेतृत्व की नकारात्मकता से जुझना पड़ता है, साथ ही कांग्रेस की नकारात्मकता के कारण आम राजपूत में उसके प्रति पनपी नकारात्मकता से भी जुझना पड़ता है। कुल मिलाकर दृश्य यह उभर कर आता है कि राजपूत के कांग्रेस के निकट आने में कांग्रेस ही सबसे बड़ी बाधा बनकर खड़ी रहती है। यहां उल्लेखनीय है कि आज से 20 वर्ष पूर्व तक तो कांग्रेस के प्रदेश नेतृत्व ने राजपूतों के प्रतिनिधि मंडल से मिलने तक को मना कर दिया था क्यों कि वे यह मानते थे कि राजपूत हमारे नहीं है। हालांकि समाज के स्तर पर अनेक सकारात्मक प्रयासों से उक्त नेतृत्व के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है एवं आज उस स्तर तक दुराव नहीं है लेकिन फिर भी अभी तक कांग्रेस के प्रदेश नेतृत्व द्वारा ऐसा कोई विशेष प्रयास नजर नहीं आता जिससे अब तक की नकारात्मकता को दूर किया जा सके। इस कारण कांग्रेस पार्टी में सक्रिय युवा राजपूतों को भी विशेष संघर्ष करना पड़ता है। वे भी समाज के लोगों को कांग्रेस की तरफ मोड़ने का प्रयास करते है तो उनको भी सबसे पहले इसी प्रश्न का सामना करना पड़ता कि कांग्रेस ने क्या सकारात्मक किया? विगत विधानसभा चुनावों में समाज के लोगों ने चलाकर कांग्रेस के पक्ष में माहौल बनाने का प्रयास किया एवं ऐसी आशा भी बनी थी कि कांग्रेस इस बार समाज के लोगों को अधिक प्रतिनिधित्व देगी लेकिन वह आशा भी निराशा में बदली और जैसा माहौल था वैसा प्रयास पार्टी की तरफ से नहीं किया गया। हालांकि समय के साथ कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व आंशिक परिवर्तन नजर आता है, आर्थिक आधार पर आरक्षण की शर्तों का सरलीकरण इसका एक उदाहरण भी है लेकिन इसके बावजूद कांग्रेस के नेताओं में गहरी पैठी वह नकारात्मकता छिप नहीं पाती और गाहे बगाहे प्रकट होती रहती है। उदाहरण के लिए वर्तमान राज्य सरकार के शिक्षा मंत्री ने मंत्री बनते ही महाराणा प्रताप के प्रति नकारात्मक टिप्पणी कर प्रारंभ से चली आ रही उस नकारात्मकता को प्रकट किया और उसी नकारात्मकता के बल पर अपनी राजनीतिक चमकाने का प्रयास किया। हालांकि चौतरफा विरोध के कारण उन्होंने अपना वह वक्तव्य बदला पर अंदरखाने पाठ्यक्रम में अपनी उक्त मंशा के अनुरूप बदलाव कर अपनी उस नकारात्मकता एवं कुंठा को पुष्ट कर ही दिया। कांग्रेस में महत्व पा रहे ऐसे तत्व आज भी इस पार्टी को सर्व समावेशी बनाने की अपेक्षा केवल कुछ वर्गों की पार्टी बनाकर अन्य वर्गों के इसमें प्रवेश को प्रतिबंधित करना चाहते है। कितने दुर्भाग्य का विषय है कि आजादी के 70 वर्षों के बाद भी किसी मुख्यधारा की पार्टी के नेता किसी समाज विशेष के प्रति इतने कुंठित और नकारात्मक हैं। ऐसे में सभी पार्टियों की तरह कांग्रेस में भी राजस्थान में राजपूतों के सक्रिय होने में कांग्रेस पार्टी ही बड़ी बाधा बनकर उभर रही है। कांग्रेस का प्रदेश का एवं केन्द्र का नेतृत्व जब तक अपना अंतरावलोकन कर अपनी पार्टी के ऐसे नकारात्मक लोगों को नियंत्रित नहीं करेगा तब तक आम राजपूत में इस पार्टी से दुराव की भावना को दूर नहीं किया जा सकता और ऐसे में सभी पार्टियों की तरह इस पार्टी में भी सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने के प्रयास करने वाले सामाजिक नेतृत्व एवं इस पार्टी में काम कर रहे राजपूत नेताओं द्वारा समाज को इस पार्टी से जोड़ने में कठिनाई आती रहेगी।

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी ने हमारे गौरवशाली इतिहास का अपनी पुस्तक बदलते दृश्य एवं होनहार के खेल में वर्णन किया है। उन्होंने झनकार में भी स्थान-स्थान पर इतिहास एवं उसके पात्रों को स्थान दिया है। ऐसे सभी संदर्भों को संकालित कर प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि हम उन संदर्भों को जान सकें।

'उत्तर भड़ किंवाड़' की उपाधि से विभूषित जैसलमेर का भाटी वंश गजनी से लेकर जैसलमेर तक विभिन्न उतार चढ़ावों को पार करते हुए भारत के स्वाभिमान की रक्षा करने में सदैव सफल रहा। पूज्य तनसिंह जी ने 'बदलते - दृश्य' के ग्यारहवें अध्याय 'उत्तर भड़ किंवाड़' में भोजदेव व जैसलदेव के पराक्रम का जीवन्त वर्णन किया तथा उन्होंने पुनः सत्रहवे प्रकरण 'बदलते दृश्य' वाह जैसलमेर! वाह!! लिखते हुए भगवान श्री कृष्ण के वंशजों के संघर्ष एवं नई-नई राजधानियों का वर्णन किया। मथुरा के बाद ये कृष्णवंशी पश्चिमोत्तर की ओर वर्तमान अफगानिस्तान तक आगे बढ़े। पश्चिम के पातशाह राजा गजबाहु ने युधिष्ठिर संवत् 308 की अक्षय तृतीया रविवार को रोहिणी नक्षत्र में गजनी की स्थापना कर गांधार प्रदेश पर केसरिया परचम फहराया। उनके उत्तराधिकारियों ने पेशावर, लाहौर तथा हिसार को राजधानी बनाकर कई शताब्दियों तक पंजाब के भटिण्डा से लेकर अफगानिस्तान तक अपना शासन चलाया। सन् 197 ईस्वी में राजा शालिवाहन ने लाहौर के पास शालिवाहनपुर (स्यालकोट) नगर बसाया। उनके पौत्र राजा भाटी एक पराक्रमी यौद्धा थे। उन्होंने अनेक युद्ध लड़े और सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर आर्यावर्त में अपनी धाक जमाई। उनके कुंवर भूपत ने सन् 286 ईस्वी में भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़) की नींव रखी। राव मंगलराव ने मूमलवाहण तो उनके कुंवर मंडमराव ने मारोठ किले की नींव रखी। तत्पश्चात ये यदुवंशी भाटी सिंध होते हुए राजपूताना के थार मरूस्थल के पश्चिमी भाग में स्थापित हुए जो ख्यातों में वल्लमंडल नाम से प्रसिद्ध है तथा स्थानीय भाषा में माडधरा के नाम से विख्यात है। राव केहर ने संवत् 827 में ज्येष्ठ वदी पंचमी को गढ किरोहर (केहरोर) बनवाया। बाद में देवी तिणोटिया की आज्ञा से अपने बड़े कुंवर तणुराव के नाम से गढ तनोट (दुगम) स्थापित कर राजधानी कायम की। पराक्रमी विजयराज चूंडाला के कुंवर रावल देवराज ने सन् 852 में देरावल/देरावर गढ़ (बहावलपुर पाकिस्तान) की कीर्तिगाथा लिखने के बाद लौद्रवा पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी कायम की। रावल देवराज ने मेवाड़ के बप्पा रावल से गठबंधन कर अरब आक्रमणकारियों से टक्कर लेकर उन्हें आर्यावर्त की सीमा से परे धकेलने में सहयोग किया। विजयराज लांझा द्वारा अपनी सास को दिए गए वचन उनके कुंवर वीर भोजदेव ने निभाते हुए गजनी के बादशाह से भीषण युद्ध कर अपने प्राणों की आहुति देकर 'उत्तर भड़ किंवाड़' के विरद को साकार किया। जसधारी जैसलदेव ने संवत् 1212 की श्रावण सुदी द्वादशी को अपनी राजधानी लौद्रवा से 12 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित गोरहरे पहाड़ पर गढ़ की नींव रखी तथा संवत् 1219 में इस जैसलमेर को अपनी राजधानी बनाया। चारपाई की मौत की बजाय रणभूमि में वीरगति प्राप्त करने के लिए वयोवृद्ध भाटी शासक चाचगदेव ने मुल्तान के लंघा शासक को द्वंद्व युद्ध हेतु ललकारा तथा वीरता के जौहर दिखाते हुए जैसलमेर के यश को चारों दिशाओं में फैलाते हुए रणखेत रहे। नररत्न मूलराज व रतनसी ने जैसलमेर दुर्ग के पहले साके तथा तेजस्वी दूदा व तिलोकसी ने दूसरे साके में अद्भुत वीरता का परिचय देकर जैसलमेर के गौरव को बढ़ाया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत

पूर्व सांसद गिरीजा व्यास

पूर्व विधायक रणवीर सिंह भीण्डर

प्रताप के प्रताप...

सरपंच से लेकर सांसद तक सभी जनप्रतिनिधियों से यथाशक्ति सम्पर्क किया गया एवं अभी भी प्रयास जारी है। सभी का सकारात्मक सहयोग मिल रहा है एवं सभी अपनी तरफ से मुख्यमंत्री को पत्र लिख रहे हैं। राजस्थान से बाहर के अनेक संगठनों का भी सहयोग मिल रहा है। 28 जून को इस विषय पर प्रताप विरोधी कांग्रेस के हैशटैग के साथ फिर से ट्विटर ट्रेंड चलाया। दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक चले इस ट्विटर ट्रेंड में सभी का सहयोग मिला एवं 5 बजे तक पूरे भारत में टॉप रैकिंग का ट्रेंड बना। इससे सभी का ध्यान इस ओर

भीनमाल

आकर्षित हुआ। राजस्थान से प्रारम्भ हुआ विरोध पूरे भारत तक पहुंचा एवं राष्ट्रीय मीडिया में भी यह मुद्दा बना। राजस्थान के अलावा अब यह विषय दिल्ली, गुजरात, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में भी उठने लगा है। केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ओम माथुर, पूर्व केन्द्रीय मंत्री गिरीजा व्यास, प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष रघुवीर मीणा, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दीपेन्द्रसिंह, पूर्व मंत्री वासुदेव देवनानी, पूर्व मंत्री पी.पी. चौधरी, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया सहित अनेक सांसद, कांग्रेस व भाजपा के विधायक इस विषय पर अपना विरोध दर्ज करवा चुके है। अनेक संगठनों ने अपने स्तर पर प्रशासन को ज्ञापन सौंप कर भी विरोध प्रकट किया है।

पांचवा सेवा विस्तार

गुजरात के पाटण जिले के चारूप निवासी सोलंकी बलदेवसिंह चंदनसिंह को गुजरात सरकार ने ए.सी.पी. (एस.ओ.जी.) के पद पर पांचवा सेवा विस्तार दिया है। प्रायः इतनी बार सेवा विस्तार मिलता नहीं है लेकिन आपकी योग्यता के कारण गुजरात सरकार इस प्रकार का विशिष्ट सेवा विस्तार दिया है।

(पृष्ठ पांच का शेष)

शाखामृत-1... अर्थात कर्मणा जन्म और जन्मना वर्ण होता है। गीता की भी यही मान्यता है। वर्ण धर्म के पालन में ही मनुष्य की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं का अंत भी निहित है। इसी प्रकार अगले प्रकरण 'स्वधर्म' पर चर्चा में उन्होंने बताया कि सृष्टि में जड़-चेतन सभी के अस्तित्व का कोई न कोई हेतु होता ही है अतः किसी व्यक्ति, संस्था और समाज का जीवन भी निरुद्देश्य नहीं हो सकता। पश्चिम की विचारधारा मानती है कि व्यक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार स्वयं अपने उद्देश्य का निर्धारण करता है जबकि गीता के अनुसार हमारा जीवन एक शाश्वत परंपरा है, लंबी श्रृंखला की एक कड़ी है। इसीलिए मनुष्य का उद्देश्य पूर्व निर्धारित होता है, उसके स्वयं के द्वारा चयनित नहीं। मनुष्य के जन्म के साथ उसे अपने पूर्वजों द्वारा संचित परंपरा भी प्राप्त होती है। इस परंपरा का पालन ही संस्कृति को जन्म देता है। सद्कर्म ही संस्कृति का निर्माण करते हैं, यदि व्यक्ति हीन कर्म करता है तो वे संस्कृति का अंग नहीं बनते अपितु संस्कृति को भंग करने का कार्य करते हैं। धर्म ही संस्कृति को अक्षुण्ण रखने वाला तत्व है। गीता ने स्वधर्म पालन को ही मनुष्य के श्रेयसाधन का मार्ग बताया है। स्वधर्म पालन में ही हमारे जीवन की सार्थकता निहित है क्योंकि यही हमारे लिए व्यावहारिक और प्राकृतिक है। प्रकृति के विरुद्ध जाकर यदि हम इतिहास निर्माण करना चाहें तो यह कल्पना आकाश कुसुम की भांति होगी। गीता स्पष्ट कहती है कि अपने स्वभाव और प्रकृति के विरुद्ध किसी का हठ कभी नहीं चल सकता। अर्जुन ने जब स्वजनों के विनाश से भयभीत होकर कर्म संन्यास की बात कही तो श्रीकृष्ण ने उसके इस निर्णय को अव्यावहारिक और अप्राकृतिक बताकर उसे स्वधर्म पालन में नियोजित किया। इसीलिए हमारे लिए भी क्षात्रधर्म का पालन ही कल्याणकारी है। गीता के अनुसार स्वधर्म गुणरहित होने पर भी परधर्म से उत्तम है। स्वधर्म का पालन इहलौकिक व पारलौकिक कल्याण का मार्ग है। हमारे पूर्वजों ने क्षात्रधर्म का पालन किया उसी के कारण जनमानस का सम्मान उन्हें प्राप्त हुआ। जब से हमने स्वधर्म पालन की उपेक्षा की तभी से हमारे पतन का प्रारंभ हुआ। स्वधर्म पालन हमारी सत्ता के स्वामी की मांग है जिसे पूरा करना हमारा कर्तव्य है। आज के समय में स्वधर्म के बंधन को तोड़कर जिस स्वछंदता को प्रोत्साहन मिल रहा है वह व्यक्ति को पतन की ओर ले जाकर समाज और संस्कृति के विनाश का कारण बन रही है। इसका समाधान स्वधर्म पालन से ही हो सकता है। गीता स्वधर्म का पालन निष्काम भाव से करने पर जोर देती है क्योंकि समाजोत्थान आदि स्वधर्म पालन के स्वाभाविक परिणाम हैं किंतु उसका उद्देश्य कदापि नहीं। पुस्तक के अगले प्रकरण 'संस्कारमयी कर्म प्रणाली' पर चर्चा प्रारम्भ करते हुए अजीतसिंह जी ने बताया कि लक्ष्य कितना ही महान हो किन्तु यदि वहां तक पहुंचने का सरल मार्ग उपलब्ध न हो तो वह लक्ष्य मात्र प्रदर्शन की वस्तु है क्योंकि जिस ज्ञान को आचरण में नहीं उतारा जा सकता वह पाखंड का स्वरूप ले लेता है। अतः लक्ष्यप्राप्ति के लिए मार्ग का उपलब्ध होना आवश्यक है। विचार प्रणाली के क्रियान्वयन के लिए कर्म प्रणाली का होना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि कर्म के तीन मुख्य स्वरूप है- नित्य कर्म, नैमित्तिक कर्म तथा काम्य कर्म। हमारे इन कर्मों के आधार पर ही संचित, प्रारब्ध व क्रियमाण कर्मों का निर्माण होता है। कर्म प्रत्येक व्यक्ति करता ही है, यह सतत चलने वाली प्रक्रिया है। साथ ही कर्म चाहे जैसा भी हो उसका फल भी मनुष्य को किसी न किसी जन्म में भोगना ही होता है। कर्मफल का निर्धारण कर्म के स्थूल स्वरूप पर नहीं अपितु उसके पीछे जो भावना रहती है, उसी के अनुसार होता है। अतः निष्काम भाव से किए जाने वाले कर्म दोष उत्पन्न नहीं करते। गीता ने ऐसे कर्म को ही यज्ञ कहा है। यह यज्ञ ही परमात्मा से मिलन का मार्ग है।

(पृष्ठ एक का शेष)

आनन्दपाल...

हो सकता है वे कुछ अति महत्वाकांक्षी लोगों को अपना ग्रास बना लेवें, उनसे अपनी ईच्छानुसार करवा लेवें, जैसा वे करते आए हैं लेकिन जिनका जीवन ही समाज का स्वरूप बन गया है, उनके लिए उन्हें सपने ही आएंगे। जिनको कुछ पाना नहीं हो उन्हें कोई क्या दे सकता है? इसलिए हमें ऐसे अवसर पर धैर्य से काम लेना है। कई बार जो दिखता है वह भी सच नहीं होता तब तो जो कानों से सुनाई दे उस पर विश्वास करने में तो सदैव सावधान रहे। अफवाहों से बचना है और जोश व होश बनाए रखना है। राजनेता चाहे इधर का हो चाहे उधर का वह विशुद्ध रूप से राजनेता होता है, इसलिए न ये अपने हैं और न ही वे अपने है। हम स्वयं अपने बने रहेंगे तो शेष सभी अपने बनने को तरसेंगे। जो लोग इस अवसर को समाज की नेतागिरी करने का अवसर मानते हैं वे फिर पनपेंगे, फिर हमें बहकाने और भड़काने का प्रयास करेंगे। राजनेताओं के हाथ की कठपुतली बनकर ऐसा करेंगे लेकिन हमें सावधान रहना है। जिन सम्मानित और संजीदा लोगों को आरोपी बनाया गया है वे हमारे समाज की अमूल्य संपत्ति है इसलिए उनके नाम पर ऐसा कुछ नहीं करना है जो हमारी उस धरोहर पर प्रश्न चिह्न लग जाए। हमारे वरिष्ठ जन हमारे से बहुत अधिक समझदार हैं, उनके निर्देशों का पालन करना है, अपने जोश को उनके होश के अधीन नियंत्रित करना है, उनके अनुभव से दिशा देनी है। साथ ही हम सबको इस आंदोलन को एक केश स्टडी के रूप में देखना है। कैसे हम जीती हुई बाजी हार जाते हैं, कैसे हम न्याय मांगने जाते हैं और अन्याय के शिकार हो जाते हैं, कैसे हमारी व्यक्तिगत अपरिपक्वता पूरे समाज को कठघरे में खड़ा कर देती है, कैसे नेतृत्व के पीछे हमें लामबद्ध होना चाहिए, कैसे हम पहचान पाए कि कौन वास्तव में अपना है और कौन पराया होकर अपना बनने का नाटक कर रहा है? ये ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिनके उत्तर हमें इस आंदोलन का अध्ययन करने पर मिलेंगे। आशा है हम हर ठोकर से सीखने की चाह के साथ आगे बढ़ेंगे और अंतरावलोकन और मनन जारी रखेंगे।

(पृष्ठ छह का शेष)

संघ साहित्य...

भाइयों की इन अटूट व अद्वितीय जोड़ियों ने जौहर-साको की महागाथाएं लिखकर जैसाण गढ़ के उन्नत भाल पर अपने उज्ज्वल रक्त से अभिषेक किया। शरणागत वत्सल लूणकर्ण ने भी उसी बलिदानी परम्परा का निर्वहन कर जैसलमेर का तीसरा साका किया। संघर्षशील घड़सी और मणिधारी मालदेव ने भी उत्तरी द्वार की कीर्ति लड़ियां पिरोकर उसे भव्यता प्रदान की। इन दोनों ने क्रमशः दूसरे व तीसरे साके के बलिदानों का बदला लेकर दुश्मनों को दुर्ग से खदेड़ कर पुनः राज कायम किए। अमरसिंह के शासन काल में सिंधु नदी के किनारे स्थित रोहड़ी दुर्ग पर बलोचों द्वारा धोखे से आक्रमण करने पर जौहर-साके की परम्परा का निर्वाह किया गया तथा स्वयं अमरसिंह ने सैन्य शक्ति के बल पर उन शत्रुओं से बदला लिया। वहां सतियों की पहाड़ी आज भी मौजूद है। लूणकर्ण की लाडली मानिनी ऊमादे भटियाणी ने अपने स्वाभिमान की रक्षार्थ जीवनपर्यन्त पतिमुख न देखकर अन्त में पतिव्रत धर्म के लिए अपने पति राव मालदेव जोधपुर के शव के साथ अग्नि प्रवेश किया। चित्तौड़गढ़ के रावल रतनसिंह की पत्नी महासती पद्मिनी भटियाणी ने अलालउद्दीन खिलजी के घेरे के समय जौहर कर राजपूती गौरव के नया अध्याय लिख डाला। माता रानी भटियाणी जन-जन की आराध्य होकर देवी स्वरूप पूजित है। इस प्रकार त्याग और बलिदान से ओतप्रोत साहसिक विलक्षण गाथाओं को असिधाराओं से माडधरा की बालू पर उकेरने वाले ये भाटी यौद्धा कुशल संगठक, चतुर राजनीतिज्ञ, उत्कृष्ट रणनीतिकार, अप्रतिम जननायक, कठोर वीरव्रती, चरित्रवान तथा अविचलित ध्येयनिष्ठा वाले महान राष्ट्र पुरुष थे। साथ ही इस कुल में जन्मी नारियां भी अपने क्षत्रियोचित संस्कारों के कारण आज भी हमें प्रेरणा देती है। ये सभी गौरवगाथाएं हमें याद दिलाती है कि वे भी क्षत्रिय थे व हम भी क्षत्रिय है। **- रतनसिंह बडोड़ागांव**

जालमसिंह थोब का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **जालमसिंह थोब** का 20 जून को देहावसान हो गया। परमेश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान देकर चिर शांति प्रदान करावें। आप झाझी रामपुरा में 12 मई 1953 से 19 मई 1953 तक आयोजित शिविर में पहली बार आए एवं अपने जीवन में 35 शिविर किए।

जालमसिंह थोब

वर्चुअल मार्गदर्शन कार्यशालाएं

(पशु चिकित्सा शिक्षा एवं पशु विज्ञान वेबिनार)

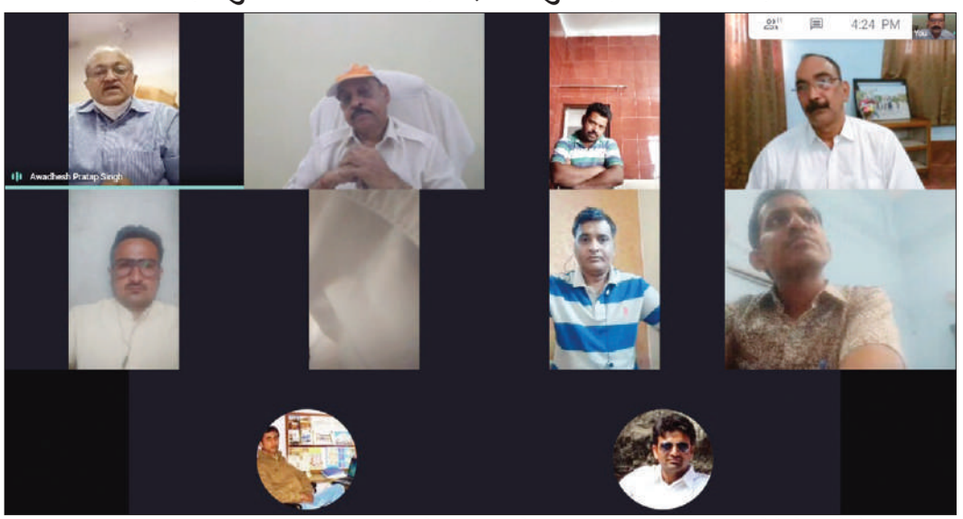

पशु चिकित्सा शिक्षा एवं पशु विज्ञान एक विस्तृत क्षेत्र है जो मनुष्य के जीवन से आधार भूत रूप से जुड़ा हुआ है। श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन द्वारा 20 जून को इस विषय पर एक वेबिनार आयोजित की गई जिसमें वेटरनरी विश्वविद्यालय बिहार के डीन डॉ. वीरसिंह राठौड़, वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के डीन डॉ. आर.के. सिंह, डायरेक्टर क्लिनिक्स एवं मेडीसन विभाग डॉ. ए.पी. सिंह एवं सहायक आचार्य व प्रभारी लाईव स्ट्रोक रिसर्च स्टेशन बीछवाल डॉ. नरेन्द्रसिंह राठौड़ ने इस विषय में मार्गदर्शन प्रदान किया। डॉ. वीरसिंह ने इस विषय की व्यापकता बताते हुए कहा कि वेटरनरी का अर्थ केवल पशु चिकित्सा ही नहीं है बल्कि यह पशुओं से संबंधित सभी विषयों को समाहित करता है एवं इसमें रोजगार की अपार संभावनाएं है। इसमें गंभीरता से प्रयास करने पर लोग केवल रोजगार पाने वाले ही नहीं बल्कि रोजगार देने वाले भी बन सकते हैं। उन्होंने महिलाओं के लिए भी इस क्षेत्र में संभावनाओं पर चर्चा की। बीकानेर विश्वविद्यालय के डीन डॉ. आर.के. सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों को इस विषय को प्रथम वरीयता के रूप में चुनना चाहिए। उन्होंने पशु चिकित्सा के अलावा पशु विज्ञान के अन्य आयामों की चर्चा करते हुए शिक्षण, मानव स्वास्थ्य, दवा निर्माण, शौध, कृषि आदि अनेक क्षेत्रों में इस विषय से संबंधित अवसरों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पशु विज्ञान में मेडिकल साईस से ज्यादा संभावनाएं है। प्रति 5 हजार पशुओं पर एक चिकित्सक की आवश्यकता है लेकिन अभी इस अनुपात से हम बहुत दूर हैं इसलिए इस विषय में अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने वर्तमान में राजस्थान में पशु विज्ञान शिक्षा से संबंधित संस्थानों की भी जानकारी दी। डॉ. ए.पी. सिंह ने पशु चिकित्सा विज्ञान के इतिहास के बारे में जानकारी देते हुए इसमें अवसरों के बारे में विस्तार से बताया। सरकार के विभिन्न विभागों, सेना, पैरा मिलिट्री फोर्स आदि में इस विषय से संबंधित रोजगार की संभावनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। निजी क्षेत्र में स्वयं के रोजगार को प्रारंभ करने में इस शिक्षा के सहायक होने के बारे में जानकारी दी। निजी क्षेत्र की विभिन्न कंपनियों में रोजगार की संभावनाओं के बारे में भी जानकारी दी। डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ ने प्रवेश प्रक्रिया के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि बारहवीं कक्षा में जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी वेटरनरी शिक्षा में प्रवेश के पात्र होते हैं। हर वर्ष मार्च में विज्ञापन जारी होता है एवं जून के बाद प्रवेश प्रक्रिया जारी होती है। उन्होंने राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय के संगठक कॉलेज एवं निजी महाविद्यालयों की भी जानकारी दी। श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के फेस बुक पेज पर लाईव चल रही वेबिनार में जुड़े लोगों ने इस विषय से संबंधी अनेक प्रश्न पूछे। उन प्रश्नों के भी इस दौरान जवाब दिए गए एवं शंका समाधान किया गया। लगभग 1 घंटे तक चली इस वेबिनार में फाउंडेशन के सहयोगी भी जुड़े एवं उन्होंने भी प्रश्न पूछे। यह रिकॉर्डेड वेबिनार फाउंडेशन के फेसबुक पेज एवं यूट्यूब चैनल पर अभी भी उपलब्ध है जिसका पाठक लाभ ले सकते है।

राव राजा कल्याणसिंह की 134वीं जयंती मनाई

सीकर के अंतिम शासक एवं लोक कल्याणकारी शासक राव राजा कल्याणसिंह बहादूर की 134वीं जयंती 19 जून को सीकर के राणी महल प्रांगण में मनाई गई। राजकुमार हरदयाल सिंह व राजमाता त्रिलोक्य राज्य लक्ष्मी देवी चेरिटेबल ट्रस्ट एवं शौर्य फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में चितरंजन सिंह राठौड़, पवन मोदी, ईश्वरसिंह राठौड़, राजेन्द्र खण्डेलवाल, महावीर पुरोहित आदि ने राव राजाजी द्वारा आधुनिक सीकर के निर्माण एवं शहर की जनता के चहुंमुखी विकास हेतु किए गए कार्यों का वर्णन करते हुए विभिन्न संस्मरणों के माध्यम से उनके संवेदनशील एवं लोक कल्याणकारी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। आजादी के बाद भी अपना सर्वस्व सीकर की जनता के कल्याण के लिए समर्पित करने के उनके कार्यों के कारण उन्हें तत्कालीन समय का सबसे बड़ा दानवीर कहें तो अश्योक्ति नहीं होगी। वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा चिकित्सा आदि के क्षेत्र में उनके द्वारा किए कार्यों का वर्णन किया जाए तो एक ग्रंथ बनाया जा सकता है। समारोह में कोविड-19 के मद्देनजर सरकार के निर्देशों का पूर्ण पालन किया गया।

प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश की प्रक्रिया समझाई

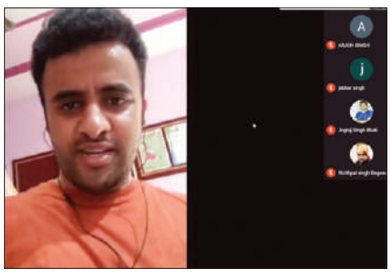

24 जून को एक वेबिनार उत्तर एवं मध्य भारत के उच्च रैंकिग प्राप्त अकादमिक विश्वविद्यालयों की प्रवेश प्रक्रिया को लेकर की गई। पुणे की सावित्री बाई पुणे विद्यापीठ के कानून विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत विक्रमादित्य सिंह चाडी ने इस वेबिनार में दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवं सावित्री बाई पुणे विद्यापीठ की प्रवेश प्रक्रिया के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत दिल्ली में स्थित 70 महाविद्यालय आते है। इनमें स्नातक में प्रवेश बारहवीं परीक्षा के प्राप्तांकों की मैरिट के आधार पर होता है। स्नातक से आगे स्नातकोत्तर के लिए अलग-अलग विभाग की अपनी प्रवेश परीक्षा होती है। इसके लिए पहले रजिस्ट्रेशन करवाना पड़ता है। इसी प्रकार एम.फिल व पी.एच.डी. के लिए भी प्रवेश परीक्षा होती है। इस बार प्रवेश के फार्म भरने की अंतिम तिथि 4 जुलाई है। उन्होंने बताया कि इस विश्वविद्यालय की यह विशेषता है कि यहां केन्द्रीय लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की तैयारी आसानी से हो जाती है। इस विश्वविद्यालय की सेंट स्टीफन्स कॉलेज अपने आप में विशिष्ट है। देश की ब्यूरोक्रेसी का बड़ा हिस्सा इस कॉलेज से पढ़कर गया है। उन्होंने कहा कि प्रायः यह भ्रांति होती है कि दिल्ली में पढ़ाई महंगी होती है लेकिन अनुभव की बात यह है कि एक सामान्य विद्यार्थी का जयपुर या जोधपुर में रहकर पढ़ने का जो खर्च आता है उतना ही यहां आता है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की चर्चा करते हुए बताया गया कि शौध के लिए यह सर्वश्रेष्ठ संस्थान है एवं सबसे सस्ते संस्थानों में से एक है। यहां छात्रावास की भी सुविधा है। यहां स्नातक स्तर पर केवल भाषाओं का ही अध्ययन होता है लेकिन स्नातकोत्तर एवं उससे आगे के पढ़ाई के लिए सभी विषय उपलब्ध है। इससे प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित होती है। साथ ही यह भारत सरकार के सभी मंत्रालयों के निकट स्थित है इसलिए सम्पर्क अच्छे बन जाते हैं, इस विश्वविद्यालय से प्रतिवर्ष लगभग 30 आई.ए.एस. बनते है। बनारस विश्वविद्यालय भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। इसके लिए मार्च में आवेदन लिए जाते हैं। इसमें सभी स्तरों के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसमें इसी विश्वविद्यालय के पूर्ववर्ती पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्न होते हैं। यहां की कानून की पढ़ाई उच्च कोटि की मानी जाती है। माना जाता है कि यहां एशिया का सबसे बड़ा छात्रावास है। सावित्री बाई पुणे विद्यापीठ एक राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय है लेकिन इसकी भी श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में गिनती होती है। विज्ञान संकाय में इसकी अपनी पहचान है। इसमें स्नातक में प्रवेश के लिए हर कॉलेज की अपनी व्यवस्था है वहीं स्नातकोत्तर एवं ऊपर के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाता है। यहां का फरग्यूशन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय की सेंट स्टीफन कॉलेज की तरह ही प्रतिष्ठित कॉलेज है। इसमें स्नात्तक के लिए मैरिट के आधार पर प्रवेश होता है। मनोविज्ञान का यह श्रेष्ठतम कॉलेज है। इसके अलावा विज्ञान में शोध की रुचि वाले विद्यार्थियों के लिए इंडियन इंस्ट्यूट ऑफ साईन्स, बैगलोर सर्वोत्तम संस्थान माना जाता है। इसके लिए भी 12वीं के बाद प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती है। दिल्ली का जनसंचार एवं पत्रकारिता शिक्षा का संस्थान भी उच्च कोटि का शिक्षण संस्थान है। वेबिनार को लाईव देख रहे लोगों ने इस बीच अनेक प्रश्न पूछे, उनका भी जवाब दिया गया। लगभग 1 घंटे चली इस वेबिनार में उपयोगी जानकारी साझा की गई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org